शोध मंथन Vol. XII No.IV Oct.-Dec. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

भारतीय सांगीतिक वाघ और उनका प्रयोग

प्राप्तिः 28.10.2021
स्वीकृतः 26.12.2021

डा० अनीता कश्यप
वरिष्ठ प्रवक्ता,रघुनाथ गर्ल्स पी० जी० कॉलेज, मेरठ
ईमेलः *anubhavkashyup@gmail.com*

सारांश

भारतीय संगीत में वाघों का महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक वाघ और संगीत का सम्बन्ध दृष्टिगोचर होता है, वाघी के प्रयोग में बिना संगीत की कल्पना भी नही की जा सकती। वाघ संगीत के आधार स्तम्भ है।

संगीत शब्द गीत में सम उपसर्ग लगाने से बचा है। ''वह गाना जिसे कोई आदमी मिलकर गाये, वाघों के साथ गाया जाने वाला गाना, नृत्य वाघ और गीत का समाहार नृत्य वाघ के साथ गाने की कला।''

मुख्य बिन्दु

1. प्रस्फुटन
2. सम्यक गीतम्
3. आघाटि
4. दुन्दुभि
5. भूमि दुन्दुभि
6. तलब

मानक हिन्दी कोष में संगीत के अर्थ है मधुर ध्वनियों का स्वरों का कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार और कुछ विशिष्ट लय में होने वाला प्रस्फुटन। यह दो प्रकार का होता है–

(क) कंठ संगीत (ख) वाघ संगीत

श्री पराजये के अनुसार प्राचीन संस्कृत वाड्मय में संगीत का उतपत्ति सम्बन्धी अर्थ ''सम्यक गीतम'' रहा है लेकिन प्रचार के अन्तर्गत ''संगीत गीत'' वाघ और नष्त्य के अभिन्न साहचर्य का सहायक रहा है।

जन्म से मृत्यु तक मनुष्य शरीर की अनेक प्रकार के संस्कारों से गुजरना पड़ता है इन संस्कारों के अवसर पर विभिन्न प्रकार के गीत नारियाँ ढोलक की लय पर गाती है।

महात्मा बुद्ध जिन्होंने सारे जगत को क्षणिक तथा जीवन को दुख माना है वह भी संगीत से प्रभावित हुये बिना नही रहे। वह गायकों की टोलिया बना कर जगह–जगह घूमते तथा गीत और वाघ के सहारे बौद्ध धर्म का प्रचार करते थे। ऋग्वैदिक काल से पूर्व एक प्रकार के संगीत वाघ का जन्म हो चुका था। उस समय[1]

एक पत्थर का वाघ प्रचलन में था जिसका नाम अग्सा था। (1) इसके अतिरिक्त मोहन जोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई में ऐसी मूर्तिया प्राप्त हुई जिसके यह ज्ञात होता है कि उस समय अनेक[2] प्रकार के वाघ प्रचलन में थे। इन मूर्तियों से गले में लटकाने वाला ढोल के अनुरूप वाघ भी प्रदर्शित होता है।

(2) ऋग्वैदिक काल में संगीत त्रिरूपों गायन, वादन और नष्त्य में प्रचलित था। इस काल में लोगों की संगीत में अत्यधिक रूचि थी। यह रूचि केवल गायन के क्षेत्र में ही देखने को नही मिलती अपितु वादन में भी दिखाई देती है ऋग्वेद के दशय मण्डल में गीत और वाघ के मजुले संयोग की बात उल्लखित है।

(3) इसके अतिरिक्त त्यौहारों उत्सवों तथा अन्य अवसरों पर नृत्य और गान अनवरत होते थे। स्त्रियाँ वीणा, झॉझ तथा करताल की लय के साथ नृत्य व गान में अपनी दक्षता का प्रदर्शन करना अत्यधिक पसन्द करती थी। आर्य लोग कई प्रकार के वाघ बजा लेते थे। वाघ संगीत में महिलाएं संगीतज्ञ हुआ करती थी प्राचीन शास्त्रों में बहु विचित्र वीणा वेणु आदि का वैदिक वाघ यंत्रों के रूप में उल्लेख किया गया है यद्यपि समय परिवर्तन से इन सभी वाघों का रूपान्तर हो गया है या उनमें से कुछ वाघ अब प्रचार में नही है परन्तु यह सब वाघ ही समस्त विश्व के वाघ यंत्रों की उत्पत्ति का आधार ही भारतीय संगीत के प्रतीक है। ऋग्वेद में दुन्दुभि वाण, नाड़ी, वेणु, कर्करी, गर्गर, गोघा, पिंग तथा अघाटि वाघी का उल्लेख मिलता है। दुन्दुभि युद्ध में विजेता पक्ष द्वारा बजाया जाने वाला वाघ था। दुन्दुभि बिजल का प्रतीक थी ''जयताभित दुन्दुभि'' (1) तन्त वाघों का उल्लेख में ऋग्वेद में मिलता है अघाटि को एक वाघ यंत्र अथवा करताल माना गया है। अघाटि नृत्य में प्रयुक्त एक वाघ यंत्र है। इसका उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

''आधाटिभिति घावयन्त्रचानिर्भियते''

इस प्रकार ऋग्वेद काल में गायन के साथ ही वाघ का निरन्तर सहचर्य रहा है।

उत्तरवैदिक काल में बहुत से पेशेवर संगीतकार भी विधमान थे। जिसका आधार तत्कालीन व्यवसायों की सूची में ढोल वादकों, बॉसुरी वादकों आदि को सम्मिलित किया जाना है। वह नृत्य गीत तथा वाघों के वादन से जीविका उपार्जन करते थे। ढोल बजाना भी एक प्रकार से व्यवसाय में ही सम्मिलित था। इस प्रकार संगीत व्यवसाय भी था। यज्ञ में नृत्याभिमानी देवता के लिये ताल देने में कुशल व्यक्ति की आहूती दी जाती थी। सामवेद के अन्तर्गत अनेक वाघों का वर्णन है। जैसे – काण्डवीणा, पिचोल, तुणव, दुन्दुभि इत्यादि अर्थववेद में दुन्दुभि का उल्लेख मिलता है। ''यजुर्वेद सहिता में वीणा, तुणव–दुन्दुभि, भूमि दुन्दुभि, शंख तलब आदि का उल्लेख मिलता है।

रामायण काल रामचन्द्र जी के जन्म और विवाह पर देवदुन्दुभियाँ बजने लगी तथा गन्धर्व एवं अप्सराओं का क्रमशः गान तथा नृत्य होने लगा ऐसा उल्लेख रामायण में है।

(1) रामचन्द्र के वनवास से लौटने पर वादित्रकुशल व्यक्तियों ने शंख और दुन्दुभियों से उनका स्वागत किया था। रामायण कालीन समाज में संगीत सर्वत्र परिव्याप्त दिखाई देता है। अयोध या किषिकन्धा तथा लंका आदि नगर सदैव वाघों की सुमधुर ध्वनि से अनभिन्न न रहे।

महाभारत काल वाघों का प्रयोग जनजीवन में अभिन्न अंगों के रूप में रहा है। इस युग में भगवान श्री कृष्ण के सांगीतिक योगदान भुलाया नही जा सकता। श्री कृष्ण का सांगीतिक ज्ञान व

वंशी वादन बड़ा ही उच्चकोटि का था। 'समाज' नामक सार्वजनिक उत्सव में अनेक प्रकार के वाघ बजाये जाते थे। लोक संगीत में सांगीतिक वाघों का प्रयोग किया जाता था। ''महाभारत काल में गीत, वादित्र तथा नाट्य का प्रवचन था। (2) राज्याभिषेक के समय पुढकर वाघ का वादन किया जाता था। पुढकर वाघ का प्रयोग राजाओं की सूचना देने के लिये भी किया जाता था। युद्ध के अवसर पर शंख, भेरी, पणव, आनक, परह, युरत आदि वाघों का समावेश था। अनेक प्रकार के शुभ कार्यो में वाघों का प्रयोग विशेषकर शंख का प्रयोग होता दिखाई देता है। गन्धर्व और किन्नरो के निवास स्थान पर गीत तथा नूर्यवाघों का मिनाद गुजायमान रहता था। इस काल में शंख, भेरी कसुॅरी, वीणा, आनक पणव आदि वाघ यंत्रों का उल्लेख मिलता है।

जैन युग में ''महावीर स्वामी के जन्म पर जो उत्सव मनाया गया था। उसमें वह नर्तक, गीत गाने वाले तृण और बीन बजाने वालों ने भाग लिया था (3) इस काल में वीणा प्रमुख रूप से प्रचलन में था। राजा उदयन स्वयं वीणा वादन में कुशल के ज बवह स्वयं वीणा वादन करते थे तब उनकी रानी नाचा करती थी। दण्ड देने हेतु भी सांगीतिक वाघों का प्रयोग किया जाता था जब अपराधियों को सजा देने हेतू जिस स्थान पर लाया जाता था। जब किणिक जाति के लोग उस समय वाघ बजाने का कार्य करते थे। इसके अतिरिक्त धार्मिक कार्यो हेतू शंख का प्रयोग किया जाता था। पटह, भेरी, दुन्दुभि डमरू का प्रयोग भी किया जाता था। भेरी वाघ का प्रयोग जनता[3] को किसी बात की सूचना हेतू लोकोत्सवों तथा युद्ध के अवसर पर किया जाता था।

बौद्धकाल में मनोरंजन हेतू संगीत प्रयुक्त होता था। अन्तः पुरों में महति वीणा मृदंग, पणव, तूर्य, वेणु आदि का वादन मनोरंजन हेतू किया जाता था। वीणा इस समय अत्यधिक प्रचार में थी। वीणा वादकों की प्रतियोगिता भी हुआ करती थी।

मौर्य काल में भी संगीत साधारण मानव के लिये आजीविका का साधन था। समाज में कुछ ऐसे वर्ग थे जिनका व्यवसाय मनोरंजन करके जीवन निर्वाह करना था। मौर्य युग के शहरों तथा ग्रामों में अनेक ऐसे लोग होते थे जो प्रतिदिन जनता का मनोरंजन करते थे। इस वर्ग में नट नर्तक, गायक, वादक जैसे सौलह वर्ग थे। जिन्हें सरकार की ओर से वेतन दिया जाता था। (1) साथ ही गीत वाघ नृत्य, अभिनय, वीणा, बॉसुरी और मृदंग बजाने जैसे अन्य कलाओं की नगर पालिका की ओर से व्यवस्था की जाती थी। (2) समुद्र गुप्त के राज्य में प्रचलित सिक्के भी उनकी संगीत प्रियता का प्रमाण ही सम्राट समुन्द्र गुप्त एक प्रकार वीणा वादक प्रकार (3) समुद्र गुप्त स्वयं वीणा वादन में कुशल था उसके काल में सिक्कों पर समुद्र गुप्त के वीणा बजाते हुये चित्र अंकित है।

गुप्त कालीन अनेक वाघों का उल्लेख मिलता है। सुसिर अर्थात फॅूक से बजाये जाने वाले वाघों का उल्लेख भी मिलता है। कालीदास ने पति वियोग से दुखित पक्ष पत्नि का मनोविज्ञान के लिये वीणा बजाये जाने का उल्लेख किया है। विभिन्न अवसरों पर विभिन्न वाघों का प्रयोग किया जाता था। तुरही एवं शंख युद्ध प्रारम्भ करने तथा विजय घोष के समय बजाये जाते थे। पूजा के समय घंटा व परह बजाया जाता था। दुन्दुभि, मृदंग, पुढकर आदि का प्रयोग शास्त्रीय गायन के साथ किया जाता था। गुप्तकालीन झूमरा के शिव मन्दिर में संगीत सम्बन्धी कुछ चित्र उपलब्ध है इनमें गीत तथा नृत्य के साथ श्रृंग, हुडक्क, शहनाई, ढोल तथा वीणा आदि वाघों के चित्र अंकित है। गीत तथा नृत्यों के साथ जिन वाघों का वादन होता था वे निम्नलिखित है– आलिग्य, वेणु, झल्लरी, तंत्री परह, अलावु वीणा इत्यादि। अजन्ता एवं एलोरा की गुफाओं में गुप्तकालीन संगीत नृत्य कला तथा विभिन्न वाघों के आकार प्रकार को अंकित करने वाली मूर्तिया है।

हर्षवर्धन काल में संगीत सर्वत्र व्याप्त था। स्वयं हर्षवर्धन संगीत प्रेमी था। इस काल में भिक्षुओं द्वारा भी संगीत का आनन्द लिया जाता रहा है। जहाँ भिक्षु संघ एकत्रित होते थे वहाँ रात Hkj nhi ekfydkgkshFkh तथा गीत वाघ द्वारा संगीतमय आयोजन होता था। इस काल में भगवान बुद्ध की देवयात्रा पर भी संगीत का उल्लेख मिलता है। ''यहाँ दो दिन और दो रात तक चलती थी इस समय सारी रात गाना बजाना होता था। हर्षवर्धन के मित्रों में पारगंत वशी वादक और दामोदर दुर्दर नामक घ5ट बजाने वाला था। वीणा वाघ का प्रचवन भी इस भाग में था। वाण द्वारा रचित ''हर्ष चरित्र'' संगीत की दृष्टि से महत्वपूर्ण ग्रन्थ माना गया है। इस ग्रन्थ में अनेक वाघों का उल्लेख मिलता है। विभिन्न उत्सवों पर वाघों का प्रयोग होता दिखाई देता है।

राजपूत काल में सती प्रथा प्रचलन में थी। सती प्रथा के समय में भी जोर शोर से संगीत वाघ बजाये जाते थे। राजपूत युग में विजयादशमी के शुभअवसरों पर दुर्गा की पूजा गा बजाकर होती थी वाघ संगीत पूर्ण रूप से विकसित था।

मुगल काल में दरबार में अनेक संगीतज्ञों को आश्रय प्राप्त था। ''गायक व कानून वादक'' अढदुल्लाह अरवारीद, ''बरबत वादक'' हुसैन ''ऊदी गायक'', यीर अंजू बावरी दरबार के प्रमुख कलाकार थे। (1) अकबर स्वयं भी नक्कारा बजाया करता था। युद्ध के समय भी अनेक वाघों के उदाहरण है। चंग वादक कासिम, त्रिजक वादक मोचक कुबुज वादक मुखालिज, हाफिज सुल्तान रखा, हाफिज मुदेरी जैसे कलाकार सैनिक पड़ावों पर भी उसका मनोरंजन करते थे। हुमायुँ ने विजय प्राप्त करने पर आगरा में एक महीने तब उत्सव मनाया था जिसमें गायक गायिकाओं ने भाग लिया। उत्तर मुगल काल में भी ओम अवसरों पर वाघों के प्रयोग के उदाहरण देखने को मिलते है।

बिट्रिश काल में ग्रामोफोन यंत्र का उल्लेख लिवाद भिवानी के आधुनिक भारत के सर्वश्रेष्ठ वीणा वादक प० गोपाल कृष्ण के पिता स्वर्गीय नन्द किशोर ने दिल्ली में नई सड़क पर एक सितार के स्कूल की स्थापना की यहाँ सितार वाघ की उच्चस्तरीय शिक्षा दी जाती थी। आधुनिक काल में वाघों के क्षेत्र में सितार तथा शहनाई वाघों की विशेष उन्नति हुई वादन के क्षेत्र में अनेक पुस्तकें लिखी गयी। बिसमिल्लाह खान शहनाई के क्षेत्र महत्वपूर्ण कार्य किया। आरक्रेस्टा के क्षेत्र में भी बहुत उन्नति हुई।

वाचलिन, हारमोनियम, शहनाई एवम् आरक्रेस्टा आदि का प्रचलन भारत में अग्रेंजो के बाद ही हुआ।

वर्तमान समय में युवा कलाकार अमजन अली खाँ सरोद वादक अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार है। आधुनिक युग में संगीत के अर्न्तगत वाघ वृन्द का विकास स्पष्ट परिलक्षित होता है।

इस प्रकार विदित कि प्राचीन काल से वाघों का संगीत में प्रयोग प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता है। इनके प्रयोग के बिना संगीत की कल्पना ही नही की जा सकती। जब भगवान शंकर नृत्य करते थे। तब सरस्वती वीणा बजाती थी इन्द्र वेणू बजाते थे और बह्ममा विष्णु करताल बजाते थे तब सरस्वती जी वीणा बजाती थी। आधुनिक समय में प्रसिद्ध सितार वादक रविशंकर द्वारा विदेश में संगीत प्रसार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। अतः वाघों का प्रयोग सर्वकालो में विदित है।

संदर्भ

1. वृहत संगीत कोष : सम्पा0 कालिका प्रसाद वाराणसी ज्ञान मण्डल लिमिटेड पृ0 1160
2. रामचन्द्र वर्मा पाँचवा खण्ड पृ0 213
3. भारतीय संगीत का इतिहास पृ0 3

4. भारतीय संगीत का इतिहास पराजये पृ016
5. प्राचीन भारतीय संस्कृति कला, राजनीति धर्म दर्शन डा० ईश्वरी प्रसार पृ0 29
6. यम सूक्त
7. त्रष्वेद 1/28/5 पृष्ठ 188
8. त्रृग्वेद 90/146/2 पृष्ठ 205
9. शुक्ल यजुर्वेद 2/17/5
10. बल 18, 16, 17, 63, 38–39।
11. महाभारत आदि पर्व 200/99/206–4
12. प्राचीन भारतीय मनोरंजन – मन्मथराय पृ0 276
13. चन्द्रगुप्त मौर्य और उसका काल, राजा कुमुद मुखर्जी 1962, पृ0 264
14. चन्द्रगुप्त मौर्य और उसका काल राजा कुमुद मुखर्जी पृ0 263
15. डा0 विघाघर महाजन पृ0 465, 67
16. आईने अकबरी ब्लॉक मैन पृ0 681–82